जगमोहन यादव
आई0पी0एस0

अ.शा.परिपत्र संख्याः डीजी- 50 /2015

पुलिस महानिदेशक,
उत्तर प्रदेश
1-तिलक मार्ग, लखनऊ-226001

दिनॉकः जुलाई 11, 2015

सन्देश

प्रिय साथियों

स्वर्णिम इतिहास एवं गौरवशाली परम्पराओं से ओत-प्रोत; एकल कमान के अन्तर्गत विश्व के सबसे बड़े पुलिस बल के प्रमुख के रूप में उत्तरदायित्व ग्रहण कर मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। उन परम्पराओं को आगे बढ़ाने के दायित्व की गम्भीरता तथा उसके लिए अपेक्षित कठिन परिश्रम का भी मुझे एहसास है ।

2. वर्तमान में उत्तर प्रदेश पुलिस एक अत्यन्त ही संवेदनशील मुकाम पर है। निकटतम् समय त्योहारों का समय है तथा उसी दौरान पंचायत चुनाव की सबसे बड़ी चुनौती भी हमारे सामने है। इस परिवेश में शान्ति-व्यवस्था एवं अपराध नियन्त्रण हमारे लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हो जाते हैं, मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सब मिलकर इन चुनौतियों का अत्यन्त ही सूझ-बूझ एवं धैर्य के साथ सामना करते हुए प्रदेश की जनता को उच्च कोटि की पुलिस व्यवस्था प्रदान करने में सफल होंगे ।

3. मैंने जो प्राथमिकताएं निर्धारित की हैं, उनकी ओर मेरे इस प्रथम सन्देश में आप सभी का ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा। अपराधों की रोकथाम तथा घटित अपराधों का अनावरण हमारे मुख्य दायित्वों में हैं। कतिपय घटनायें ऐसी घटित होती हैं, जो पुलिस अपनी सजगता से रोक सकती है, लेकिन इसी के साथ कुछ ऐसी घटनायें भी घटित होती हैं, जिनकी पुलिस द्वारा रोकथाम करना असम्भव होता है। ऐसी घटनायें जो रोकी जा सकती थी, लेकिन हमारी विभिन्न स्तरों पर दिखाई गई अकर्मण्यता एवं उत्तरदायित्वों के प्रति उदासीनता से घटित होती हैं, उनमें मैं केवल अधीनस्थों को ही नहीं, बल्कि उनके पर्यवेक्षक अधिकारियों के सभी स्तरों का उत्तरदायित्व भी निर्धारित करूंगा। ठीक उसी प्रकार जो अचानक रूप से घटनायें घटित होती हैं, उनमें भी यह मेरी अपेक्षा रहेगी कि ऐसी घटनाओं का अनावरण करने में जिला पुलिस द्वारा एवं पर्यवेक्षक अधिकारियों द्वारा कितनी कर्तव्यपरायणता प्रदर्शित की गई है। मेरा बल सदैव इस बात पर होगा कि इस विभाग के अधिकारी जिनसे कुशल नेतृत्व की अपेक्षा है, उन्होंने अपने पदों में निहित उत्तरदायित्वों का कितनी सफलता से निर्वहन करते हुए अपने अधीनस्थों का न केवल मार्गदर्शन किया है, बल्कि उनके मनोबल को ऊंचा रखते हुए अपेक्षित कार्यवाहियां भी उनसे कराई हैं अथवा नहीं ? पुलिस की नाकामयाबी उनके नेतृत्व की असफलता का ही द्योतक है। अतः सभी अधिकारियों को अपनी नेतृत्व क्षमता को जागृत करते हुए अपने उत्तरदायित्वों के निर्वहन में एक टीम भावना विकसित कर मिलजुल कर कार्य करना होगा एवं उच्चकोटि का नेतृत्व प्रदान करते हुए सम्पूर्ण विभाग में अनुशासन, जनोन्मुखी सम्वेदनशीलता, कुशलता, त्वरित गति एवं पारदर्शिता का उदाहरण प्रस्तुत करना होगा।

4. इसी कड़ी में दूसरा बिन्दु हमारी विश्वसनीयता से जुड़ा हुआ है। जहां एक ओर हम आम जनों एवं पीड़ितों के प्रति अपनी संवेदनशीलता एवं उचित व पारदर्शी कार्यों से जनता की विश्वसनीयता हासिल करते हैं, वहीं कर्तव्यों के प्रति उदासीनता, जनता की समस्याओं के प्रति असंवेदनशीलता एवं निहित शक्तियों के दुरुपयोग तथा अनुशासनहीनता से जनता का विश्वास भी खोते हैं। यह सर्वविदित है

कि आम जन छोटी-छोटी घटनायें, गुण्डई, मार-पीट तथा समाज में आमतौर से घटित होने वाले सामान्य विवादों से त्रस्त होते हैं तथा पुलिस की ओर उचित एवं त्वरित न्याय हेतु पहुंचते हैं। लेकिन हम सब ऐसे मामलों को अत्यन्त ही सरसरी तौर पर लेते हैं। ऐसे छोटे-छोटे मामलों में न्यायसंगत विधिक कार्यवाही नहीं करते हैं अथवा ऐसे मामलों का अल्पीकरण करते हैं या फिर द्विपक्षीय कार्यवाही कर इतिश्री कर लेते हैं, जिसमें पीड़ितों को कोई न्याय नहीं मिलता है एवं दबंगों के हौसले बुलन्द होते हैं। पुलिस की आम जनों में विश्वसनीयता खोने का यह सबसे बड़ा कारण है। कतिपय मामले जिनमें परम्परागत रास्ता रोका गया हो, परम्परागत पानी/नाली का बहाव रोका गया हो अथवा परम्परागत पानी के श्रोत पर पाबन्दी लगाई गई हो, ऐसे मामलों के निपटारे हेतु पुलिस एक्ट/ईज़मेन्ट एक्ट (Easement Act) में स्पष्ट प्राविधान होने के बावजूद पुलिस इसे राजस्व का मामला कहकर टाल देती है, जिसकी परिणति बड़ी घटनाओं में होती है। मेरा यह मानना है कि ऐसी छोटी-छोटी घटनाओं के प्रति यदि हम सब, विशेषकर वरिष्ठ अधिकारी सतर्क हो जायं एवं हर एक मामलों में अपराधों का पंजीकरण कर वास्तविक आक्रामक पक्ष के विरूद्ध कड़ी विधिक कार्यवाही करें, तो प्रदेश में हम सहजता से कानून का राज(Rule of Law) स्थापित कर सकते हैं एवं आम जनता की विश्वसनीयता भी हासिल कर सकते हैं। ऐसे अपराधों के पंजीकरण से अपराध आंकड़ों में वृद्धि की चिन्ता न करें, क्योंकि समीक्षा आंकड़ों की नहीं होगी बल्कि अपराधों में की गई कार्यवाही की होगी।हमारी सफलता के लिए जन विश्वास एवं जन सहयोग अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है एवं इन्हें खोने पर हम अपना इकबाल भी खोते हैं, इसी की परिणति जनता में पुलिस के प्रति आक्रोश में होती है। जिसके हमने कई दृष्टान्त देखे हैं तथा गिरते इकबाल एवं साख की वजह से पुलिस पर होने वाले हमलों की संख्या में भी बढ़ोत्तरी हुई है। हमें अपने उच्च कोटि के आचरण एवं जन समस्याओं के प्रति सम्वेदनशीलता एवं त्वरित कार्यवाही से ही जनता की विश्वसनीयता अर्जित करनी होगी तथा अपवाद स्वरूप पुलिस के विरूद्ध होने वाली घटनाओं पर मिलजुल कर पुलिस की एकता प्रदर्शित करते हुए उचित एवं कठोर वैधानिक कार्यवाही को भी अन्जाम देना होगा।

5. अपराधों की रोकथाम हेतु पंजीकृत अभियोगों की त्वरित, निष्पक्ष एवं उच्च कोटि की विवेचना तथा न्यायालयों में प्रभावी पैरवी कर पीड़ितों को कानूनी प्रक्रिया के तहत न्याय दिलाना अत्यन्त आवश्यक है। आप सभी अवगत हैं कि विवेचनाओं की ओर सभी स्तरों से विशेषकर विवेचक एवं उनके पर्यवेक्षक अधिकारी के स्तर से अत्यन्त ही उदासीनता बरती जा रही है। जबकि शासन द्वारा विवेचनाओं में सहायता हेतु उच्च कोटि के उपकरण एवं विधि विज्ञान की उन्नत तकनीकों को हमें उपलब्ध कराया गया है। यह हमारा उत्तरदायित्व है कि सरकार की इन अपेक्षाओं पर हम खरा उतरें तथा विवेचनाओं की गुणवत्ता में सुधार लाकर हम समाज विरोधी व अपराधिक तत्वों के विरूद्ध कानूनी प्रक्रिया को अपनाते हुए कार्यवाही करें। इस दिशा में पुलिस महानिदेशक मुख्यालय से लेकर जोनल तथा परिक्षेत्रीय अधिकारियों को भी पहल करनी होगी।

6. वर्तमान में रमजान का पावन माह चल रहा है तथा शीघ्र ही कांवड़ मेला एवं अन्य पर्व भी प्रारम्भ होने जा रहे हैं। इन त्योहारों के दृष्टिगत सम्पूर्ण प्रदेश में उच्च कोटि का साम्प्रदायिक सौहार्द बनाए रखने के लिए हमें सम्पूर्ण शक्ति के साथ कार्य करना होगा। हमारी सजगता दूरदर्शिता, उचित नियोजन, प्रबन्धन, जनता एवं जनप्रतिनिधियों के साथ सीधा संवाद आदि पर हमारी सफलता इस नाजुक समय में निर्भर रहेगी। मैं चाहूंगा कि सभी जनपदीय तथा अभिसूचना इकाईयां इस ओर अपना ध्यान केन्द्रित करें तथा पारस्परिक समन्वय दर्शाते हुए आने वाले सभी पर्वों के दौरान उच्च कोटि की शान्ति व्यवस्था एवं सौहार्द बनाए रखने हेतु कटिबद्ध होकर प्रयास करें ।

7. इसी दौरान हमें प्रजातन्त्र के एक अहम् चुनाव अर्थात पंचायत चुनाव के लिए भी तैयार होना है। हम सभी अवगत हैं कि इन चुनावों में संवेदनशीलता चरम पर होती है। अतः चुनाव के समय से बहुत पहले हमें प्रत्येक गांव की संवेदनशीलता आंकते हुए सम्भावित अपराधों एवं विपरीत कानून-व्यवस्था की स्थिति उत्पन्न करने वाली घटनाओं के प्रति पूर्ण तैयारियां करनी होगी तथा असामाजिक एवं अपराधिक तत्वों के विरूद्ध निरोधात्मक कार्यवाही भी करनी होगी। साथ ही साथ चुनाव के लिए वृहद रूप से जनपद में उपलब्ध पुलिस बल का उचित प्रबन्धन एवं अन्य व्यवस्थायें भी समय रहते करनी होगी। मैं चाहूंगा इस दिशा में भी आप पूर्व के चुनावों में की गई तैयारियों एवं घटित घटनाओं का अध्ययन करते हुए वर्तमान संवेदनशीलता का आंकलन कर लेंगे एवं उचित पुलिस व्यवस्थायें समय रहते लागू करेंगे ।

8. मुझे विश्वास है कि उत्तर प्रदेश पुलिस में सभी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने की सभी शक्तियां मौजूद हैं एवं हम सब उन शक्तियों को जागृत कर उत्तर प्रदेश सरकार की कानून-व्यवस्था सम्बन्धी सभी प्राथमिकताओं को पूर्ण करेंगे तथा हमारी गौरवशाली परम्पराओं को आगे बढ़ाते हुए नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे ।

शुभकामनाओं सहित ।

भवदीय,

(जगमोहन यादव)

समस्त आई.पी.एस. अधिकारी, उ0प्र0
समस्त पी.पी.एस. अधिकारी, उ0प्र0

नोटः- समस्त जनपदीय प्रभारी पुलिस अधीक्षक, पुलिस अधीक्षक रेलवेज एवं समस्त सेनानायक इस सन्देश की प्रति अधीनस्थ समस्त थाना प्रभारी/प्रतिसार निरीक्षक/दलनायक/शाखा प्रभारियों को इस निर्देश के साथ उपलब्ध करायेंगे कि वे एक सम्मेलन आयोजित कर समस्त अधीनस्थ कर्मियों को पढ़कर सुनायेंगे एवं इसकी एक प्रति नोटिस बोर्ड पर चस्पा करेंगे। इसके अतिरिक्त उ0प्र0 पुलिस की अन्य इकाईयों में भी इसकी प्रति तैनात कर्मियों के सूचनार्थ नोटिस बोर्ड पर चस्पा की जाय ।